INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD)
© 2026 IJNRD | Volume 11, Issue 2, February 2026 | ISSN: 2456-4184 | IJNRD.ORG

विद्यार्थियों की बहुपक्षीय रूचि, शाला प्रकार एवं लिंग का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर प्रभाव का अध्ययन

सुनीता कुमारी
शोधार्थी
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय,
दुर्ग (छ.ग.)

सारांश –

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के बहुपक्षीय रूचि, शाला प्रकार एवं लिंग का उनकी शेक्षिक आकांक्षा पर प्रभाव का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में दुर्ग जिले के तीन विकासखण्डों (दुर्ग, धमधा एवं पाटन) के शासकीस एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 600 विद्यार्थियों (छात्र–300 एवं छात्रा–300) का यादृच्छिक रूप से चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण के रूप में विद्यार्थियों के बहुपक्षीय मापन हेतु एस.के बावा निर्मित बहुपक्षीय मापनी तथा शैक्षिक आकांक्षा मापन हेतु व्ही.पी. शर्मा एवं अनुराधा गुप्ता (2015) द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग किया गया है। चयनित विद्यार्थियों पर उपरोक्त उपकरण का प्रशासन करने उनके प्राप्तांक ज्ञात किये गये तथा परिकल्पनाओं के सत्यापन के लिए त्रिद्विश प्रसरण विश्लेषण का उपयोग तथा 2X2X2 अभिकल्प किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम में उच्च एवं निम्न बहुपक्षीय रूचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में सार्थक अन्तर पाया गया। सीमित रूचि वाले विद्यार्थी आत्म–नियमन में बेहतर होते है, जिससे वे दीर्घकालिक शैक्षिक लक्ष्यों को अधिक गंभीरता से अपनाते है। उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की बहुपक्षीय रूचि एवं शाला प्रकार के मध्य अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव पाया गया। शासकीय विद्यालयों में उपलब्ध शैक्षिक परिवेश, संसाधनों का समान वितरण एवं सामाजिक पृष्ठभूमि शैक्षिक आकांक्षा को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है। उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बहुक्षेत्रीय रुचि तथा लिंग (छात्र एवं छात्रा) के मध्य अंतःक्रिया का उनके शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव पाया गया है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बहुपक्षीय रुचि और लिंग की संयुक्त अंतःक्रिया विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

किवर्ड : विद्यार्थी, बहुपक्षीय रूचि, शैक्षिक आकांक्षा, शाला प्रकार एवं लिंग

प्रस्तावना –

शिक्षा ही वह महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, जो मनुष्य को एक सभ्य और सुसंस्कृत मानव बनाती है। जन्म से ही बालक प्रयुक्त व्यवहार करता है। उसकी व्यवहार को परिष्कृत और सुसंस्कृत बनाने का कार्य शिक्षा ही करती है। शिक्षा के द्वारा ही मानव अपनी संस्कृति सुरक्षा करता है और उसे नवीन पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करता है। जीवन में उतारता उचित सौंदर्य वरिष्ठता शिक्षा द्वारा प्राप्त किया जाता है बल्कि बहुमुखी प्रतिभा का विकास शिक्षा के द्वारा ही संभव है। शिक्षा द्वारा ही उत्तम नैतिक मूल्यों की प्राप्ति और उनका विकास संभव है। समाज में सुख समृद्धि लाने का कार्य शिक्षा ही करता है। शिक्षा हमारे जीवन में एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा हमें समाज के नियमों, मानव अधिकारों, जीवन कौशलों, संस्कृति, तकनीकी विकास और सामाजिक समस्याओं के बारे में समझने में मदद करती है। शिक्षा न केवल ज्ञान की प्राप्ति है, बल्कि यह हमारी व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में भी एक अहम भूमिका निभाती है। एक शिक्षित व्यक्ति विभिन्न व्यवसायों में सफलता प्राप्त कर सकता है, उसका स्वास्थ्य और आर्थिक स्थिति बेहतर होती है, साथ ही समाज में भागीदारी और नागरिक की भूमिका निभाता हुआ समाज के साथ संघर्ष करने के लिए भी तैयार रहता है।

रुचि का अर्थ

किसी वस्तु, व्यक्ति, प्रक्रिया, तथ्य, कार्य आदि को पसन्द करने या उसके प्रति आकर्षित होने, उस पर ध्यान केन्द्रित करने या उससे संतुष्टि पाने की प्रवृत्ति को ही रूचि कहते हैं। रूचि का व्यक्ति की योग्यताओं से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं होता है परन्तु जिन कार्यों में व्यक्ति की रूचि होती है वह उसमें अधिक सफलता प्राप्त करता है। रूचियां जन्मजात भी हो सकती हैं तथा अर्जित भी हो सकती है।

गिलफोर्ड के अनुसार –

''रूचि किसी क्रिया, वस्तु या व्यक्ति पर ध्यान देने, उसके द्वारा आकर्षित होने, उसे पसन्द करने तथा उससे संतुष्टि पाने की प्रवृत्ति है।''

बहुपक्षीय रूचि – बहुपक्षीय रूचि से तात्पर्य किशोरों की उन भावनाओं से है जिसमें वे बहुत से रूचियों की ओर एक साथ आकर्षित होते हैं। वर्तमान बहुपक्षीय रूचि इस राष्ट्रीय आवश्यकता का परिणाम है। जैसा कि व्यावसायिक रुचि स्वतंत्र रूप से विकसित नहीं होती है और इसकी कोई स्वतंत्र पहचान नहीं होती है। यह सोचा गया है कि अन्य परस्पर निर्भर रुचि भी इसमें शामिल हैं जो व्यावसायिक हित के विकास में महत्वपूर्ण रूप से बातचीत करते हैं। रुचि में मुख्य रूप से इन 5 पहलुओं को शामिल किया जाता है (1) मनोरंजक, (2) सामाजिक, (3) धार्मिक, (4) बौद्धिक और (5) व्यावसायिक रुचि। किशोरों की रूचियाँ

उनके पहचान निर्माण में भी योगदान देती है फलस्वरूप उनके शैक्षिक कैरियर निर्माण में योगदान देती है। किशोरों में बहुपक्षीय रूचियाँ प्रदर्शित होती है। जो विभिन्न श्रेणियों में आती है। किशोरों के सबसे महत्वपूर्ण हित सात प्रमुख श्रेणियों में आते हैं ये है, मनोरंजक रूचियाँ, सामाजिक हित, व्यक्तिगत हित, शैक्षिक रूचियाँ, धार्मिक रूचियाँ। किशोर उन विषयों के बारे में जानने में ज्यादा रूचि रखते हैं जो उन्हें दिलचस्प और उपयोगी लगते हैं।

शैक्षिक आकांक्षा – प्रत्येक व्यक्ति की कोई न कोई लालसा या अभिलाषा अवश्य होती है, जो कि उच्च या निम्न स्तर की भी हो सकती है। इसी आधार पर व्यक्तियों का वर्गीकरण यथार्थवादी एवं निराशावादी श्रेणी में किया जाता है। किसी व्यक्ति में, किसी भी क्षेत्र में कुछ कर दिखाने या बनने की विद्यमान अभिलाषा को आकांक्षा कहा जाता है तथा वह व्यक्ति आकांक्षी या महत्वाकांक्षी कहलाता है। आकांक्षा और महत्वकांक्षा में कोई विशेष अन्तर नहीं है। आकांक्षा जहाँ लक्ष्य प्राप्ति हेतु प्रयत्न है, वहीं महत्वकांक्षा उससे आगे का एक कदम।

सोरेन्स के अनुसार –

"आकांक्षा स्तर, व्यक्ति द्वारा स्वयं के लिए विशिष्ट लक्ष्यों का निर्धाण करना है। आकांक्षा रूतर क्षमता व योग्यता तथा पूर्ण सफलता व असफलता से भली–भाँति प्रभावित होता है।"

संबंधित शोध अध्ययन

बहुपक्षीय रूचि से संबंधित शोध अध्ययन

फैयाज अहमद (2019) ने मुर्शिदाबाद जिले के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में लिंग, सामाजिक स्थिति, बुद्धिमता और व्यावसायिक रूचि के संबंध में तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य छात्रों में लिंग, सामाजिक स्थिति, बुद्धिमता और व्यावसायिक रूचि के संबंध का अध्ययन करना है। डाटा संग्रहण हेतु 100 छात्र एवं 100 छात्राओं का चयन यादृच्छिक रूप से किया गया। विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचि मापने हेतु डॉ. एस.पी.कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित, सामाजिक स्थिति पैमाना सुनील कुमार व अल्का सक्सेना द्वारा निर्मित किया गया संस्कृति मुक्त बुद्धि परीक्षण आर.बी. कैरल और ए.के.एस. द्वारा डिजाइन किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के बीच व्यावसायिक रूचि में विशेष अंतर नही है।

अंजली गुप्ता (2020) ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की उनके लिंग के संबंध में व्यावसायिक रूचियों का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की उनके लिंग के संबंध में व्यावसायिक रूचियों का अध्ययन करना। मेरठ जिले के माध्यमिक विद्यालय में पढ़ने वाले 50 छात्र एवं 50 छात्राओं का चयन यादृच्छिक रूप से किया गया। डाटा संग्रह के लिए वी.पी. बंसल और डी.एन. श्रीवास्तव द्वारा निर्मित वोकेशनल इंटरेस्ट रिकार्ड नामक उपकरण का प्रयोग किया। परिणाम से पता चला कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की रूचि में अंतर है।

आशुतोष उपाध्याय (2021) में सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में व्यावसायिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन किया। शोधकर्ता द्वारा हिमकुदंक न्यादर्श विधि का प्रयोग करते हुए वाराणसी के चंदेली एवं गाजीपुर जिले के जनपद के 70 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष में पाया गया कि हाईस्कूल (9वीं एवं 10वीं) स्तर के विद्यार्थियों की रूचि प्रशासनिक विषय के प्रति उच्च स्तर पर अधिक है।

श्वेता तिवारी (2021) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं सुजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं सुजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध इलाहाबाद जनपद के माध्यमिक स्तर के 200 छात्र–छात्राओं का चयन किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर बालक की शैक्षिक रूचियों के कारण सृजनात्मकता प्रदर्शित होती है।

बिनीता (2023) ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचियों का उनकी व्यक्तित्व आवश्यकताओं के संदर्भ में अध्ययन किया। अध्ययप का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों व्यावसायिक रूचियों का उनकी आवश्यकताओं का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोधकार्य में अल्मोड़ा जनपद के माध्यमिक स्तर के 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया। आंकड़ों के संग्रहण के लिए एस.पी. कुलश्रेष्ठ व्यावसायिक रूचि प्रपत्र, मीनाक्षी भटनागर द्वारा निर्मित किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि साहित्यिक, प्रशासनिक, कलात्मक तथा गृहकार्य क्षेत्र में व्यावसायिक रूचि तथा उपलब्धि की आवश्यकता के मध्य–निम्न कोटि का धनात्मक सहसंबंध है।

हरि प्रसाद एवं स्वर्णलता (2023) ने माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं के शैक्षिक अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध का उद्देश्य माध्यमिक शिक्षा स्तर अध्ययनरत् छात्र व छात्राओं के शैक्षिक अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना है। शोध कार्य में शहडोल जिले के माध्यमिक विद्यालय के 800 छात्रों का चयन यादृच्छिक रूप से किया गया। प्रस्तुत शोध हेतु प्रमापीकृत शोध उपकरण डॉ.एस.पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित शैक्षिक रूचि प्रपत्र प्रयुक्त किए गए है। निष्कर्ष से प्राप्त हुआ कि ग्रामीण व शहरी माध्यमिक शिक्षा स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अंतर है।

शैक्षिक आकांक्षा से संबंधित शोध अध्ययन

देवेन्द्र प्रताप सिंह (2020) ने माध्यमिक स्तर पर अध्ययन विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना है। डाटा संग्रहण के लिए कानपुर के माध्यमिक विद्यालय के 100 छात्रों का चयन किया गया। डॉ.वी.पी. शर्मा एवं डॉ. अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् विज्ञान वर्ग के छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा छात्राओं की तुलना में विविधता अधिक है।

कुमारी एस. एवं यादव पी. (2021) ने किशोरों शैक्षिक आकांक्षा पर लिंग के प्रभाव शीर्षक पर अध्ययन किया। शोध अध्ययन के लिए बिहार राज्य के 420 किशोर विद्यार्थियों को न्यादर्श हेतु चयन किया गया। परिणाम में अध्ययन में लिंग का शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

कौर एवं सिंग (2021) ने शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन शीर्षक पर अध्ययन किया। अध्ययन में पंजाब के 100 विद्यार्थियों जिसमें 100 छात्र एवं 100 छात्राओं का चयन न्यादेर्श हेतु किया गया। निष्कर्ष दर्शाते है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों में सार्थक अंतर पाया गयां

वर्षा गौतम (2021) में रीवा विकासखंड के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की माध्यमिक शालाओं में विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य रीवा विकासखंड के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की माध्यमिक शालाओं में विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन करना हैं डाटा संग्रह हेतु 250 विद्यार्थियों का चयन किया गया। प्रस्तुत शोध में उपलब्धि के मापन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली व परीक्षाफल के आधार पर किया गया है। निष्कर्ष में पाया गया कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की आकांक्षा स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

अल्पना एवं प्रियांगनी (2021) में उच्च माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्म्क अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान एवं कला वर्ग के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना है। डाटा संग्रह हेतु 50 विद्यार्थियों का चयन गुच्छ प्रति चयन विधि से किया गया। आंकड़ों की प्राप्ति के लिए प्रमाणीकृत परीक्षण "आकांक्षा स्तर की मापनी" एम.ए. शाह एवं महेश भार्गव द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर कला वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पाई गई।

श्रुति द्विवेदी (2021) ने लखनऊ शहर में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का एक तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना है। डाटा संग्रह के लिए लखनऊ के माध्यमिक विद्यालय के 300 छात्रों का चयन किया गया। प्रस्तुत शोध में याशमीन गनी खान द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि माध्यमिक विद्यालय के छात्र और छात्राओं के बीच शैक्षिक आकांक्षा के स्तर में कोई महत्वपूर्ण नहीं है।

रीनू पिंडर एवं सी.के.सिंह (2021) में ग्रामीण एवं शहरी हाई स्कूल के विद्यार्थी के बीच शैक्षिक आकांक्षा एवं माता–पिता के प्रोत्साहन पर तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य शहरी एवं ग्रामीण हाई स्कूल के विद्यार्थी के बीच शैक्षिक आकांक्षा एवं माता–पिता के प्रोत्साहन का अध्ययन करना हैं डाटा संग्रह हेतु 240 छात्रों का चयन हिसार, फतेहाबाद जिले से किया है। शर्मा एवं गुप्ता द्वारा निर्मित एस्पिरेशन स्केल, मूल्यांकन के लिए शर्मा स्केल उपकरण का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के बच्चों की शैक्षिक आकांक्षाओं और माता–पिता का प्रोत्साहन काफी अधिक था।

आर. हरीदास एवं अन्य (2022) में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में शैक्षिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन कुड्डालोर जिले में शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में माध्यमिक छात्र का अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध में 300 छात्रों का चयन किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि छात्रों की शैक्षणिक आकांक्षा उनके समकक्षों की तुलना में अधिक है। उच्चतर माध्यमिक छात्रों के बीच सार्थक अंतर है।

टी.सेवाराज (2022) ने कुड्डालोर जिले के उच्च माध्यमिक उच्च माध्यमिक छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक आकांक्षा के संबंध का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध में 300 छात्रों का चयन किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा और समकक्षों की तुलना में अधिक है।

सिंह एवं पाठन (2023) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन : (नवोदय विद्यालय, सरकारी और निजी विद्यालय) शीर्षक पर अध्ययन किया। अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में शासकीय, अशासकीय एवं नवोदय विद्यालयों के 456 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को चयनित किया गया। विद्यालय के प्रकार का विद्यार्थियों की आकांक्षा की पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पाया गया।

राधा गुप्ता (2023) में स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं का उनकी सांवेगिक बुद्धि के संदर्भ में अध्ययन किया। डाटा संग्रह हेतु जनपद झाँसी के महाविद्यालयों में स्नातक स्तर के तृतीय वर्ष में अध्ययनरत् 200 कला संकाय, 200 वाणिज्य संकाय तथा 200 विज्ञान संकाय के छात्र–छात्राओं का चयन किया गया। निष्कर्ष में पाया गया कि स्नातक स्तर के छात्र–छात्राएँ, निम्न सांवेगिक बुद्धि वाले छात्र–छात्राओं की तुलना में शैक्षिक आकांक्षाओं की दृष्टि से श्रेष्ठ है। स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षाओं पर सांवेगिक बुद्धि का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

अध्ययन की आवश्यकता –

वर्तमान समय में विभिन्न कैरियर उपलब्धता के कारण छात्रों की रूचियाँ दिन–प्रतिदिन बदलती रहती है एवं इंटरनेट के विभिन्न साधनो ं द्वारा दिन प्रति–दिन छात्रों की बदलती शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक आकांक्षा का अध्ययन आवश्यक प्रतीत होता है। किशोरावस्था वह अवस्था होती है जब विद्यार्थी अत्यधिक दिशाहीन होते है तथा प्रतिदिन विभिन्न कारणों से प्रभावित होकर

उनकी रूचियाँ बदलती रहती है। जैसे–जैसे छात्रों की रूचियाँ बदलती है वह अत्यधिक काल्पनिक प्रवृत्ति के हो जाते है तथा छात्रों की यह प्रकृति उनकी शैक्षिक आकांक्षा को भी प्रभावित करती है। समाज की उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्नति हो परन्तु समाज की उन्नति भावी राष्ट्र निर्माता अर्थात विद्यार्थियों की उन्नति पर ही निर्भर है। सभी वर्ग के विद्यार्थियों की कई प्रकार की समस्याएँ होती है उनमें से एक समस्या विद्यार्थियों की शैक्षिक आंकाक्षा एवं वृत्तीका सें सम्बन्धित होती है। इस तरह की विभिन्न समस्याओं को दूर करना आवश्यक है। अतः शैक्षिक आकांक्षा एवं बहुपक्षीय रूचि का अध्ययन सामाजिक एवं शैक्षिक दोनों ही दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है। शैक्षिक आकांक्षा के द्वारा मनुष्य श्रेष्ठ प्रशासक, व्यावसायी या नेता बनता है। मनुष्य उच्च शैक्षिक आकांक्षा से प्रेरित हो कर अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु पूर्ण मनोयोग से कार्य करता है तथा लक्ष्य प्राप्ति के बाद मनुष्य की शैक्षिक आकांक्षा में और अधिक विस्तार हो जाता है। विश्व के प्रत्येक प्राणी की कुछ न कुछ आकांक्षा होती है। विश्व का प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य के परिणाम को सही एवं सटीक जानकारी प्राप्त करना चाहता है। अध्यापक अपने विद्यार्थियों (उत्पादों) के शैक्षिक उपलब्धि (गुणवत्ता) की जानकारी के लिए मापन और मूल्यांकन की विविध प्रविधियों का प्रयोग कर करते हैं। क्योंकि आकांक्षा स्तर व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण पक्ष है तथा जीवन के विभिन्न क्षेंत्रों में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शैक्षिक आकांक्षाएँ विद्यार्थियों के रूचियाँ, कैरियर निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस समस्या को समझने व निराकरण हेतु शोधार्थी द्वारा इस विषय का चयन किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य –

- उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के बहुपक्षीय रूचि, लिंग एवं शाला प्रकार का शैक्षिक आकांक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

अनुसंधान विधि –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उद्देश्य के परिणाम प्राप्त करने हेतु परिकल्पना के परीक्षण हेतु आँकड़ों का एकत्रण करने के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन की परिसीमाएँ –

प्रस्तुत शोध हेतु दुर्ग जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं तक परिसीमित किया गया है। यह शोध कार्य दुर्ग जिले के तीन विकासखण्डों (दुर्ग, धमधा एवं पाटन) तक ही सीमित किया गया है। शोध कार्य दुर्ग जिले के तीनों विकासखंडों में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 300 तथा अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 300 छात्र–छात्राओं तक न्यादर्श हेतु परिसीमित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण हेतु डॉ. (श्रीमती) एस. के बाबा द्वारा निर्मित बहुपक्षीय रूचि मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में उपकरण हेतु वी.पी. शर्मा तथा अनुराधा गुप्ता (2015) द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा मापनी का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श –

अध्ययन में परिकल्पनाओं के सत्यापन के लिए दुर्ग जिले के तीन विकासखण्डों (दुर्ग, धमधा एवं पाटन) के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 600 विद्यार्थियों (छात्र एवं छात्राओं) का चयन गैर अनुपातिक यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण –

प्रस्तुत शोध में स्वतंत्र चरों का आश्रित चरों पर प्रभाव एवं विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय विधि का उपयोग किया गया है जिसके लिए SPSS का प्रयोग किया गया – मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, प्रसरण विश्लेषण।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के लिए $(3\times2\times2)$ त्रिदिश प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई है।

परिकल्पना परिणाम व विश्लेषण –

प्रस्तुत शोध की समस्या दुर्ग जिले उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से प्राप्त आंकड़ों की व्याख्या विश्लेषण एवं निष्कर्ष हेतु परिकल्पना का सत्यापन किया गया।

परिकल्पना –

H_{01} -

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के बहुपक्षीय रूचि, लिंग एवं शाला प्रकार का शैक्षिक आकांक्षा पर मुख्य एवं अंतःक्रियात्मक प्रभाव सार्थक नही पाया जायेगा।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के बहुपक्षीय रूचि, लिंग एवं शाला प्रकार का शैक्षिक आकांक्षा पर मुख्य एवं अन्तःक्रियात्मक प्रभाव ज्ञात करने के लिये भी 3X2X2 त्रिदिश प्रसरण विश्लेषण की गणना कर प्राप्त परिणामों को प्रसरण विश्लेषण की सारांश तालिका क्रमांक 1.1 में प्रस्तुत किया गया है–

तालिका क्रमांक 1.01

विद्यार्थियों की बहुपक्षीय रूचि, शाला प्रकार एवं लिंग का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर मुख्य एवं अन्तःक्रियात्मक प्रभाव के लिए त्रिदिश प्रसरण विश्लेषण का सारांश

विचरण के स्त्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्रता का अंश	वर्गों का मध्यमान	एफ मूल्य
बहुपक्षीय रूचि	1.047	1	1.047	4.410 *
शाला प्रकार	.381	1	.381	1.605 NS
लिंग	.243	1	.243	1.022 NS
बहुपक्षीय रूचि X शाला प्रकार	4.432	1	4.432	18.673**
बहुपक्षीय रूचि X लिंग	2.110	1	2.110	8.889**
शाला प्रकार X लिंग	.870	1	.870	3.664 NS
बहुपक्षीय रूचि X शाला प्रकार X लिंग	.400	1	.400	1.687 NS
त्रुटि	140.519	592	.237	
योग	1.047	1	1.047	
संशोधित योग	.381	1	.381	

(* सार्थकता स्तर = 0.05), (सार्थकता स्तर = 0.01), (NS =सार्थक नहीं है)**

मुख्य प्रभाव

- **बहुपक्षीय रूचि**

तालिका क्रमांक 1.01 से यह स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बहुपक्षीय रूचि के लिए एफ मान 4.410, df 592/1 पाया गया। यह एफ मान 0.05 स्तर के सारणी मान 3.84 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की बहुपक्षीय रूचि का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा, अस्वीकृत होती है।

यह जानने के लिए कि उच्च एवं निम्न बहुपक्षीय रूचि वाले विद्यार्थियों में किसकी शैक्षिक आकांक्षा उच्च है, उच्च एवं निम्न बहुपक्षीय रूचि के मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन की संगणना की गई जिन्हें तालिका क्रमांक 1.02 में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक 1.02

उच्च एवं निम्न बहुपक्षीय रूचि वाले विद्यार्थियों का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर प्रभाव के लिए मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

बहुपक्षीय रूचि	N	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
उच्च	297	1.4545	0.4987
निम्न	303	1.5413	0.4991

आरेख क्रमांक 1.01
उच्च एवं निम्न बहुपक्षीय रूचि वाले विद्यार्थियों का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर प्रभाव के लिए मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन का आरेख

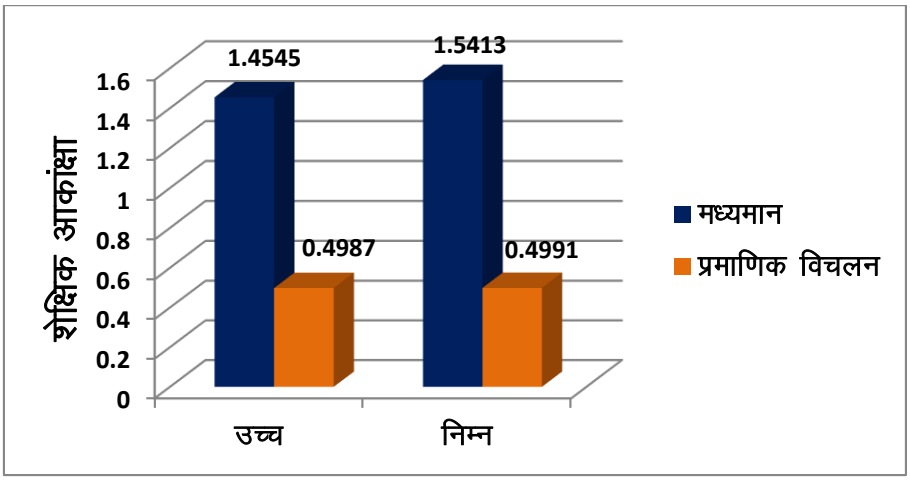

तालिका क्रमांक 1.02 एवं आरेख क्रमांक 1.01 से स्पष्ट होता है कि उच्च बहुपक्षीय रूचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के प्राप्तांकों का मध्यमान 1.4545 एवं प्रमाणिक विचलन 0.4987 जबकि निम्न बहुपक्षीय रूचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के प्राप्तांकों का मध्यमान 1.5413 एवं प्रमाणिक विचलन 0.4991 पाया गया। जो स्पष्ट करता है कि उच्च एवं निम्न बहुपक्षीय रूचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में सार्थक अन्तर पाया गया।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचना से स्पष्ट है कि उच्च एवं निम्न बहुपक्षीय रूचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा में सार्थक अन्तर पाया गया। निम्न बहुपक्षीय रुचि वाले विद्यार्थी सामान्यतः सीमित क्षेत्रों में गहरी रुचि रखते हैं, अपने लक्ष्य के प्रति अधिक स्पष्ट होते हैं, तथा निर्णय लेने में कम द्वंद अनुभव करते हैं। इस कारण उनकी शैक्षिक आकांक्षा अधिक संगठित एवं उच्च स्तर की होती है। **सिंह (2023)** ने भी अपने अध्ययन में इसी तरह का परिणाम पाया कि निम्न बहुपक्षीय रूचि वाले छात्रा अपने कैरियर के चुनाव में अधिक सटिक होते है।

व्याख्या एवं विश्लेषण

परिणामों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उच्च बहुपक्षीय रूचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा का मध्यमान निम्न शैक्षिक आकांक्षा वाले विद्यार्थियों की मध्यमान से कम पाया गया। अतः उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की बहुपक्षीय रूचि का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव पाया गया। इससे निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सीमित रूचि वाले विद्यार्थी आत्म–नियमन में बेहतर होते है, जिससे वे दीर्घकालिक शैक्षिक लक्ष्यों को अधिक गंभीरता से अपनाते है। सामाजिक एवं पारिवारिक अनपेक्षाएँ निमन बहुपक्षीय रूचि वाले विद्यार्थियों को परिवार एवं समाज से अधिक स्पष्ट मार्गदश्रन प्राप्त होता है, जबकि उच्च बहुपक्षीय रूचि वाले विद्यार्थियों के लिए अपेक्षाएँ कई दिशाओं में बँटी होती है।

- **शाला प्रकार**

तालिका क्रमांक 1.01 से यह स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शाला प्रकार के लिए एफ मान 1.605, df 592/1 पाया गया। यह एफ मान 0.05 स्तर के सारणी मान 3.84 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शाला प्रकार का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा, स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शाला प्रकार का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

- **लिंग**

तालिका क्रमांक 1.01 से यह स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की लिंग के लिए एफ मान 1.022, df 592/1 पाया गया। यह एफ मान 0.05 स्तर के सारणी मान 3.84 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के लिंग का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा, स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

इस विवेचना से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की लिंग का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

- **बहुपक्षीय रूचि X शाला प्रकार के मध्य अंतःक्रिया का प्रभाव**

तालिका क्रमांक 1.01 से यह स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बहुपक्षीय रूचि एवं शाला प्रकार के मध्य अंतःक्रिया के लिए एफ मान 18.673, df 592/1 पाया गया। यह एफ मान 0.01 स्तर के सारणी मान 6.64 से बहुत अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की बहुपक्षीय रूचि एवं शाला प्रकार के मध्य अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा, अस्वीकृत होती है।

यह जानने के लिए कि बहुपक्षीय रूचि एवं शाला प्रकार के मध्य अंतःक्रिया किस प्रकार शैक्षिक आकांक्षा पर प्रभाव डालती है, मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन की गणना की गई है जिन्हें तालिका क्रमांक 4.03 में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक 1.03

बहुपक्षीय रूचि एवं शाला प्रकार के मध्य अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर प्रभाव के लिए मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

बहुपक्षीय रूचि	शाला प्रकार	N	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
उच्च	शासकीय	140	1.5714	0.4966
	अशासकीय	157	1.3503	0.4786
निम्न	शासकीय	160	1.4812	0.5012
	अशासकीय	143	1.6084	0.4898

आरेख क्रमांक 1.02

बहुपक्षीय रूचि एवं शाला प्रकार के मध्य अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर प्रभाव के लिए मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन का आरेख

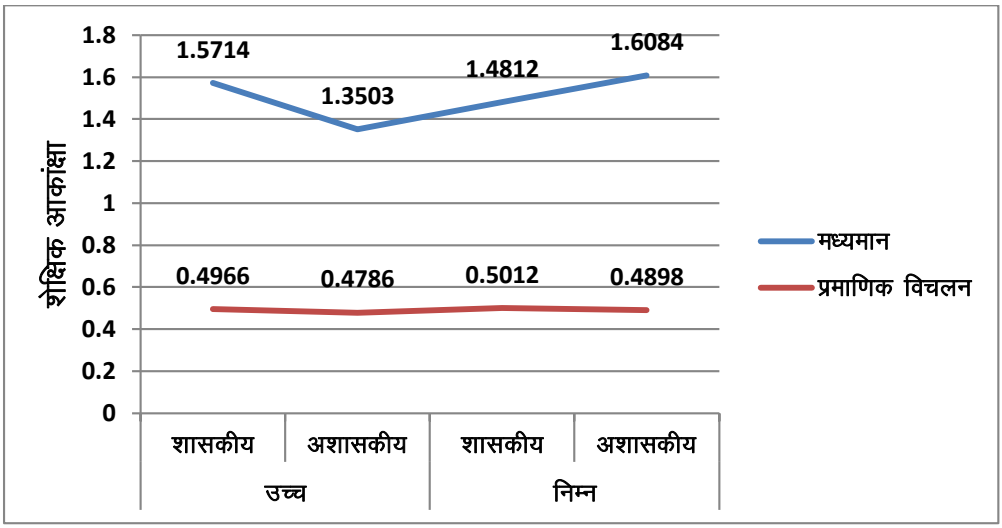

तालिका क्रमांक 1.03 एवं आरेख क्रमांक 1.02 से स्पष्ट होता है कि उच्च बहुपक्षीय रूचि वाले शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के प्राप्तांकों का मध्यमान 1.5714 एवं प्रमाणिक विचलन 0.4966 तथा उच्च बहुपक्षीय रूचि वाले अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के प्राप्तांकों का मध्यमान 1.3503 एवं प्रमाणिक विचलन 0.4786 जबकि निम्न बहुपक्षीय रूचि वाले शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के प्राप्तांकों का मध्यमान 1.4812 एवं प्रमाणिक विचलन 0.5012 तथा निम्न बहुपक्षीय रूचि वाले अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के प्राप्तांकों का मध्यमान 1.6084 एवं प्रमाणिक विचलन 0.4898 पाया गया।

निष्कर्ष

इससे स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की बहुपक्षीय रूचि एवं शाला प्रकार के मध्य अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव पाया गया। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बहुपक्षीय रुचि और शाला प्रकार की संयुक्त अंतःक्रिया विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और यही कारण है कि शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। **कुमार एवं वर्मा (2016)** के परिणामों में भी इसी प्रकार का निष्कर्ष प्राप्त हुआ।

व्याख्या एवं विवेचना

उपरोक्त विवेचना से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बहुक्षेत्रीय रुचि तथा शाला प्रकार (शासकीय एवं अशासकीय) के मध्य अंतःक्रिया का उनके शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव पाया गया है। उच्च बहुपक्षीय रुचि वाले शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का शैक्षिक आकांक्षा का मध्यमान अशासकीय विद्यालय के समान रुचि वाले विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाया गया, जिससे यह संकेत मिलता है कि शासकीय विद्यालयों में उपलब्ध शैक्षिक परिवेश, संसाधनों का समान वितरण एवं सामाजिक पृष्ठभूमि शैक्षिक आकांक्षा को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है। वहीं निम्न बहुक्षेत्रीय रुचि वाले विद्यार्थियों में अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का मध्यमान शासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों से अधिक पाया गया, जो यह दर्शाता है कि अशासकीय विद्यालयों में व्यक्तिगत मार्गदर्शन, प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण एवं अभिभावक सहभागिता जैसे कारक उन विद्यार्थियों की आकांक्षा को प्रोत्साहित करते हैं जिनकी रुचियाँ सीमित होती हैं।

- **बहुपक्षीय रूचि X लिंग के मध्य अंतःक्रिया का प्रभाव**

तालिका क्रमांक 1.01 से यह स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बहुपक्षीय रूचि एवं लिंग के मध्य अंतःक्रिया के लिए एफ मान 8.889, df 592/1 पाया गया। यह एफ मान 0.05 स्तर के सारणी मान 3.84 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की बहुपक्षीय रूचि एवं लिंग के मध्य अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा, अस्वीकृत होती है।

यह जानने के लिए कि बहुपक्षीय रूचि एवं लिंग के मध्य अंतःक्रिया किस प्रकार शैक्षिक आकांक्षा पर प्रभाव डालती है, मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन की गणना की गई है जिन्हें तालिका क्रमांक 4.03 में दर्शाया गया है।

तालिका क्रमांक 1.04
बहुपक्षीय रूचि एवं लिंग के मध्य अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर प्रभाव के लिए मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

बहुपक्षीय रूचि	लिंग	N	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
उच्च	शासकीय छात्र	69	1.4783	0.5031
	अशासकीय छात्र	75	1.2800	0.4520
	शासकीय छात्रा	71	1.6620	0.4764
	अशासकीय छात्रा	82	1.4146	0.4956
निम्न	शासकीय छात्र	81	1.4568	0.5012
	अशासकीय छात्र	75	1.7067	0.4583
	शासकीय छात्रा	79	1.5063	0.5031
	अशासकीय छात्रा	68	1.5000	0.5037

आरेख क्रमांक 1.03

बहुपक्षीय रूचि एवं लिंग के मध्य अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर प्रभाव के लिए मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

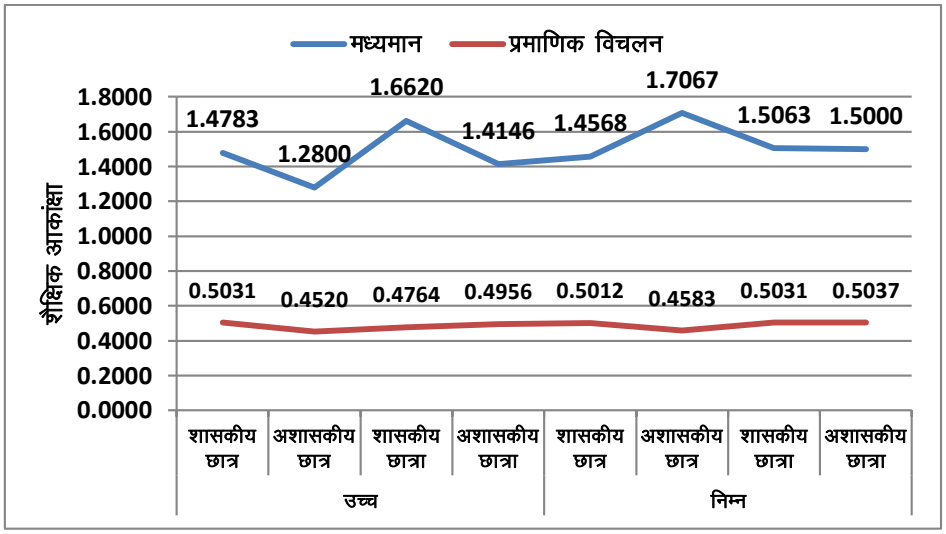

तालिका क्रमांक 1.04 एवं आरेख क्रमांक 1.03 से स्पष्ट होता है कि उच्च बहुपक्षीय रूचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के प्राप्तांकों का मध्यमान 1.454 एवं प्रमाणिक विचलन 0.496, जबकि निम्न बहुपक्षीय रूचि वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा के प्राप्तांकों का मध्यमान 1.541 एवं प्रमाणिक विचलन 0.499 पाया गया तथा उच्चतर माध्यमिक के छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा के प्राप्तांकों का मध्यमान 1.480 एवं प्रमाणिक विचलन 0.5, जबकि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं की शैक्षिक आकांक्षा के प्राप्तांकों का मध्यमान 1.516 एवं प्रमाणिक विचलन 0.5 पाया गया। स्पष्ट करता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की बहुपक्षीय रूचि एवं लिंग के मध्य अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बहुक्षेत्रीय रुचि तथा लिंग (छात्र एवं छात्रा) के मध्य अंतःक्रिया का उनके शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव पाया गया है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बहुपक्षीय रुचि और लिंग की संयुक्त अंतःक्रिया विद्यार्थियों की शैक्षिक आकांक्षा को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, इसी कारण शून्य परिकल्पना अस्वीकृत पाई गई। **सिंह (2015)** के शोध परिणामों में भी इसी प्रकार का निष्कर्ष प्राप्त हुआ।

व्याख्या एवं विवेचना

उपरोक्त परिणामों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि उच्च बहुपक्षीय रुचि वाले शासकीय छात्राओं का शैक्षिक आकांक्षा का मध्यमान शासकीय छात्रों तथा अशासकीय छात्रों की तुलना में अधिक पाया गया, जिससे यह संकेत मिलता है कि बहुपक्षीय रुचि के साथ–साथ लिंग संबंधी सामाजिक–शैक्षिक कारक भी शैक्षिक आकांक्षा को प्रभावित करते हैं।

वहीं निम्न बहुपक्षीय रुचि समूह में अशासकीय छात्रों का मध्यमान सर्वाधिक पाया गया, जबकि अन्य समूहों में यह अपेक्षाकृत कम रहा। यह परिणाम दर्शाता है कि जब विद्यार्थियों की रुचियाँ सीमित होती हैं, तब शाला का प्रकार एवं प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण विशेष रूप से छात्रों की शैक्षिक आकांक्षा को प्रभावित करता है। सभी समूहों में मानक विचलन लगभग समान पाया गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न समूहों में आंतरिक विचरण लगभग समान स्तर पर है।

- **शाला प्रकार X लिंग के मध्य अंतःक्रिया का प्रभाव**

तालिका क्रमांक 1.01 से यह स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शाला प्रकार एवं लिंग के मध्य अंतःक्रिया के लिए एफ मान 3.664, df 592/1 पाया गया। यह एफ मान 0.05 स्तर के सारणी मान 3.84 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शाला प्रकार एवं लिंग के मध्य अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा, स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचना से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शाला प्रकार एवं लिंग के मध्य अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

- **बहुपक्षीय रूचि X शाला प्रकार X लिंग के मध्य अंतःक्रिया का प्रभाव**

तालिका क्रमांक 1.01 से यह स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की बहुपक्षीय रूचि, शाला प्रकार एवं लिंग के मध्य अंतःक्रिया के लिए एफ मान 1.687, df 592/1 पाया गया। यह एफ मान 0.05 स्तर के सारणी मान 3.84 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की बहुपक्षीय रूचि, शाला प्रकार एवं लिंग के मध्य अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा, स्वीकृत होती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचना से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की बहुपक्षीय रूचि, शाला प्रकार एवं लिंग के मध्य अंतःक्रिया का उनकी शैक्षिक आकांक्षा पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

सुझाव –

1. विद्यार्थियों की बहुपक्षीय रुचि के संदर्भ में सुझाव

- विद्यालयों में विभिन्न सह–पाठ्यक्रम एवं पाठ्येतर गतिविधियों (कला, खेल, विज्ञान, साहित्य, तकनीकी आदि) को प्रोत्साहन दिया जाए।
- कैरियर परामर्श (ब्तममत ब्वनदेमसपदह) की नियमित व्यवस्था की जाए, ताकि छात्र अपनी रुचि और क्षमता के अनुरूप शैक्षिक लक्ष्य निर्धारित कर सकें।
- शिक्षकों को छात्रों की विविध रुचियों की पहचान करने और उन्हें दिशा देने हेतु प्रशिक्षित किया जाए।
- अभिभावकों को भी बच्चों की रुचि को समझने और सहयोग करने के लिए जागरूक किया जाए।

2. शाला प्रकार के संदर्भ में सुझाव

- सरकारी एवं निजी विद्यालयों के बीच संसाधनों, शिक्षण–सुविधाओं एवं मार्गदर्शन में समानता लाने का प्रयास किया जाए।
- ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में शैक्षिक अवसरों की समान उपलब्धता सुनिश्चित की जाए।
- विद्यालयों में आधुनिक तकनीकी साधनों (स्मार्ट क्लास, कंप्यूटर लैब आदि) का समावेश किया जाए।
- विद्यालय प्रशासन को छात्रों की शैक्षिक आकांक्षाओं को बढ़ाने हेतु प्रेरक कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए।

3. लिंग के संदर्भ में सुझाव

- बालक एवं बालिकाओं के बीच शैक्षिक अवसरों में समानता सुनिश्चित की जाए।
- बालिकाओं की उच्च शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु विशेष अभियान चलाए जाएँ।
- लैंगिक भेदभाव को समाप्त करने के लिए संवेदनशीलता कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ।
- छात्राओं को आत्मविश्वास एवं नेतृत्व कौशल विकसित करने के अवसर प्रदान किए जाएँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- **Ahmed, F. (2019).** A study of vocational interests of secondary school students in relation to gender, social status, intelligence, and vocational aptitude. International Journal of Educational Research and Studies, 4(2), 45–52.
- **Gupta, A. (2020).** A comparative study of vocational interests of secondary school students with reference to gender. Journal of Educational Psychology and Research, 5(1), 60–66.
- **Gautam, P. (2021).** A comparative study of educational aspirations of urban and rural secondary school students. Journal of Rural and Urban Education, 5(1), 22–30.
- **Kumar, S., & Yadav, P. (2021).** A study on factors influencing educational aspirations of adolescents. Indian Journal of Psychology and Education, 11(1), 41–48.
- **Kaur, P. (2021).** A comparative study of educational aspirations of secondary school students. International Journal of Educational Sciences, 13(2), 90–97.
- **Nishita. (2023).** Vocational interests and personal needs of higher secondary school students. Asian Journal of Educational Development, 7(1), 101–109.

- **Prasad, H., & Swapnil. (2023).** A comparative study of academic interests among secondary school students. International Journal of Multidisciplinary Educational Research, 12(3), 55–63. Educational Aspiration Related Studies
- **Singh, D. P. (2020).** A study of educational aspiration levels of science students at the secondary level. Journal of Indian Education, 46(2), 72–79.
- **Sharma, A., & Priyamani. (2021).** A comparative study of educational aspiration levels of science and arts students at higher secondary level. Journal of Educational Trends and Practices, 8(2), 110–118.
- **Singh, S. K., & Padhan, A. (2023**). Level of aspiration of adolescents: A comparative study of Navodaya Vidyalayas, government schools and private schools. International Research Journal of Educational Psychology, 6(2), 23–29
- **Tiwari, S. (2021).** A comparative study of academic interest and creativity among secondary level students. Journal of Creativity and Education, 3(1), 33–40.
- **Upadhyay, A. (2021).** Vocational aspirations of students studying in government and private secondary schools. Indian Journal of Educational Studies, 6(2), 88–95.

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.